Preface

आ मु ख

प्रत्येक युग, नयी परिस्थितियां, नयी मान्यताएं और नये विचार लेकर आता है जिसके फलस्वरूप नयी काव्य में प्रवृत्तियों का जन्म होता है जिनके अपने आदर्श, सिद्धान्त और मानदण्ड होते हैं। प्रतिक्रिया एवं परिवर्तन जगत का शाश्वत नियम है। भाषा चूंकि एक सामाजिक यथार्थ है इसलिए बदलाव की स्थिति आना स्वाभाविक है। ध्वनिकार ने 'वाणीनवत्वमायाति -------- मधुमास-मिव द्रुमा:' कहकर काव्यभाषा के जिस नये तथ्य की ओर संकेत किया था वह नवता नयी कविता में नये तेवर और नयी भंगिमाओं के साथ विद्युच्छटा-सी समा गयी है। जिस प्रकार वसन्त ऋतु के आते ही वृक्षों में नयी - नयी टहनियां और कोंपलें उग आती हैं उसी प्रकार काव्य भाषा भी नयी परम्परा के विकास के साथ नये तेवर और नयी भंगिमाओं से युक्त होकर भाषिक सृजनशीलता की एक नयी परिपाटी कायम करती है। अर्थग्रहण की प्रक्रिया में बदलाव आता है तथा अर्थाभिव्यक्ति के नये - विधान विकसित होते हैं। 'नव्यं भवति काव्यं ग्रथन कौशलात्' भाषा का औचित्य एवं शब्दों का उचित संग्रथन ही उसे नवता के शिखर पर चढ़ाता है। प्रत्येक युग की कविता भाषा तथा कथ्य के आधार पर नयी होती है। प्रत्येक रचनाकार का अनुभव नया होता है और वह एक नयी बात नये ढंग से कहना चाहता है।

नयी कविता अपनी अभिव्यक्ति, प्रेषणीयता, नवीनता तथा उपलब्धि की दृष्टि से प्रयोगशील कविता का ही एक विकसित रूप है जिसे प्रयोगशील नयी कविता भी कहा गया है। जहां पर पूर्ववर्ती कवियों का झुकाव कोमल, रंजक, तथा वायवी शब्दों की ओर अधिक था। वहीं पर नयी कविता में पूर्व प्रचलित शब्दों को प्रतीकात्मक प्रयोगों तथा नये- नये सन्दर्भों के अनुसार ढालकर नया अर्थ भरने का प्रयास किया गया। अभिमन्यु, एकलव्य, द्रौपदी, व्यूह, द्रोणाचार्य

आदि पौराणिक एवं ऐतिहासिक शब्दों के माध्यम से अभिव्यंजनाएं की गयीं, जो नयी कविता को भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से नयी चेतना प्रदान करती हैं। अलंकरण, उक्ति वैचित्र्य, उपमान विधान की घिसी- पिटी परम्पराओं का परिष्कार कर उसके साथ ही नये प्रतीकों, उपमानों, बिम्बों, की अभिव्यंजना कौशल के लिए परिसंस्कार देती हैं। नयी कविता के कवियों ने निश्चय ही यथार्थ दृष्टि, सामाजिक न्याय की चेतना, जीवन संघर्षों की कटुता, जटिलतर सत्यों की अभिव्यक्ति तथा नया संस्कार, नया सौन्दर्य बोध, नयी भाषा शैली तथा नये शिल्पको निस्सन्देह अपने पूर्ववर्ती कवियों से प्राप्त कर समृद्ध बनाया है। नयी कविता के कवियों के सामने ~~स~~ सबसे बड़ी बात यह है कि वे मानसिक एवं परिवेश जन्य कारणों से उलझी हुई संवेदना को सुलझाकर काव्य में उतारना अपना कर्तव्य नहीं मानते। जिसके कारण कवियों की भाषा में जटिलता एवं दुरुहता का आना स्वाभाविक है। नयी कविता का कवि 'भाषा की क्रमश: संकुचित होती हुई सार्थकता की केंचुल फाड़कर उसमें नया, अधिक व्यापक अधिक सारगर्भित अर्थ भरना चाहता है। जिसके कारण उसे भाषा के अप्रकट साधनों पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है जैसे - अप्रस्तुत, वक्रोक्ति, प्रतीक, व्यंजना, आदि। कभी- कभी वह अपनी उलझी हुई संवेदना का भार हलका करने के लिए नयी टेकनीक का सहारा लेता है। कभी- कभी वह सचोट धारदार भाषा का प्रयोग करता है। कभीवह मिथकों एवं प्रतीकों से युक्त भाषा का प्रयोग करता है। तो कभी देश की अव्यवस्था, तथा राजनैतिक एवं सामाजिक विसंगतियों को तनाव, आक्रोश तथा खीझ के सहारे अभिव्यक्ति देता है जिससे भाषा में गम्भीरता आ जाती है। कभी- कभी स्पष्ट कथन की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती। व्याकरण के नियमों की अवहेलना के साथ कवि अभिव्यक्ति के नये संसाधनों को उपयोग में लाकर वक्रता उत्पन्न करने का प्रयास करता है। कभी- कभी वह ज्यामितीय एवं गणितीय चिन्हों जैसे धन, ऋण, ब्रैकेट्स, हाइफन,कामा, तथा उल्टे टाइप से अक्षरों को प्रयोग में लाता है। इस प्रकार वह स्फीत कथन, मितकथन, शब्दों का लम्बीकरण, आवृत्ति, पैरेन्थीसिस, हाइफन,कामा

एवं विराम चिन्हों द्वारा वक्रता के नये आयामों का सृजन करता है ।

नयी कविता के कवियों ने काव्य भाषा के सूक्ष्म से सूक्ष्म संरचनात्मक अवयवों को लेकर भाषा के वैशिष्ट्य को एक नयी दिशा दी है । एक तरफ समीक्षकों ने काव्यशास्त्र और भाषा शास्त्र के मापदण्डों के अनुसार काव्य - भाषा के विवेचन- विश्लेषण की आवश्यकता पर बल दिया है तो दूसरी ओर कवियों ने बिना किसी प्रतिमान या निकष का प्रश्न उठाये हुए ही काव्य भाषा की समस्याओं को उठाने का प्रयास किया है । जैसे - तनाव, आक्रोश, व्यंग्य, जटिलता, बांकपन, ऋजुता, गंभीरता, सार्थकता, ध्वननशीलता, प्रेषणीयता, नाटकीयता, अमूर्तता, व्यंजकता तथा सपाटोक्ति ।

यहां हम स्पष्टरूप से कह देना चाहते हैं कि यदि भाषा की सांकेतिकता, व्यंजकता,ध्वन्यात्मकता, जटिलता, बांकपन, अमूर्त आदि की व्याख्या में प्रवृत्त होकर समीक्षा करना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हमें साहित्यिक आलोचना, एवं भाषा शास्त्र के नियमों और आदर्शों को सामने रखना होगा चाहे वह भारतिय हों या विदेशी प्रसंगानुकूल नये सिरे से जांच करनी ही होगी । जब हम कविता के तर्क संगत ढांचे के नियन्त्रण में वर्ण, ध्वनि, पद, वाक्य आदि अवयवों की भूमिका पर विचार करना चाहें तो उपयुक्त आदर्शों से सरोकार रखना ही होगा । शब्दों का स्वभाव उनका रागात्मक सौन्दर्य, अर्थ - व्यंजकता, सघनता तथा प्रेषणीयता शब्दों के साहचर्य से ध्वन्यार्थ तथा संवेदना के धरातल को कैसे छू पाती है ? व्यंग्यार्थ में रसान्तर की स्थिति कैसे छिपी होती है ? भाषा अलंकार योजना से कहां तक प्रभावित होती है ? काव्य- बिम्ब और अलंकार विधान का मौलिक पार्थक्य कहां तक काव्य भाषा के अध्ययन में पहुंचता है ? संश्लिष्ट या खंडित, मूर्त या अमूर्त, सपाट या ऐंद्रियिक (रंग,रूप, स्पर्श, गंध, गति सम्बंधी) बिम्बों के निर्माण में काव्यभाषा की क्या विशिष्टता प्रकट होती है ? भाषा का ध्वनि एवं वक्रोक्ति मूलक प्रयोग, भाषा का व्यंग्य एवं व्यंजना व्यापार,

Laiq... 's

रीतिगत सौन्दर्य, शब्दों का उचित संग्रथन, काव्य भाषा को कितनी गहराई के साथ प्रभावित करते हैं ? प्रतीक, लक्षणा तथा मुहावरों के प्रयोग भाषा की व्यंजकता को किस स्तर तक प्रभावित करते हैं ? आदि प्रश्नों पर गहराई के साथ विचार करते हुए प्रस्तुत शोध- प्रबन्ध में काव्य भाषा की शक्ति तथा उसके नये परिप्रेक्ष्य का अनुसंधान किया गया है । नयी कविता के अधिकांश कवियों तथा आलोचकों ने छन्द पर उतना नहीं अपितु लय के प्रश्न को लेकर चर्चा अवश्य की है । काव्य-लय लय से शब्द लय और शब्द लय से अर्थ लय तक की संभावनाओं पर विचार किया गया है । भाषा में अन्तर्निहित तत्व लय को ही कविता और गद्य के बीच विभेदक के रूप में स्वीकार किया गया है । नयी कविता के जिन कवियों ने लय के निर्वाह में सावधानी नहीं बरत पाये उनकी कविता कोरा गद्य मात्र रह गयी है । तीसरे सप्तक के बाद छन्द मुक्ति का पूरा आग्रह दिखायी देता है । रघुवीर-सहाय, मुक्ति बोध, जगदीश गुप्त, कुंवर नारायण, सर्वेश्वर, लक्ष्मीकान्त वर्मा, श्याम परमार, कैलाश वाजपेयी, मलयज, धूमिल, जगूड़ी, दूधनाथ सिंह, विनय तथा जगदीश चतुर्वेदी की कविताओं में छन्द मुक्तता का आग्रह दिखायी देता है । इन कवियों तथा आलोचकों ने शब्द चयन और उसके सुगत प्रयोग पर बड़ी बारीकी से विचार किया । मुक्ति बोध की कविताएं तो प्रचलित मानदण्डों की सीमा रेखा को तोड़ती हुई आगे बढ़ी । उन्होंने फेंटेसी, स्वप्न कथा तथा नाट्यात्मकता के सहारे अपनी लम्बी और अधूरी कविताओं का सृजन किया । रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, राजकमल चौधरी, मलयज, धूमिल, जगूड़ी आदि की कविताएं नये रूपाकार में उभरीं । किसी में फेंटेसी, किसी में नाटकीय कौशल किसी में बिडम्बना एवं विसंगति की प्रधानता दिखायी देती है । कुछ कवियों की सर्जना तत्सम तद्भव की दीवार पर खड़ी है तो कुछ बोलचाल की भाषा को लेकर आगे आये । अलग- अलग कविताएं अलग- अलग व्यक्तित्व रखने लगीं जिससे भाषा प्रयोग में भी अलगाव की स्थिति आयी । प्रस्तुत शोध- प्रबन्ध सात परिच्छेदों में विभक्त है । अन्त में परिशिष्ट की भी योजना हुई है ।

प्रथम परिच्छेद के अन्तर्गत नयी कविता की पृष्ठभूमि, सम-सामयिक परिवेश नयी कविता उद्भव एवं विकास तथा नयी कविता से सम्बद्ध चलने वाले विविध काव्यान्दोलनों पर गहराई के साथ विचार किया गया है। एक नयी शोध दृष्टि देने के साथ-साथ विभिन्न आलोचकों, कवियों, एवं समीक्षकों के मत भी यथा-संभव दिए गए हैं। द्वितीय परिच्छेद में वैयाकरणों, भारतीय काव्य शास्त्रियों तथा पाश्चात्य समीक्षकों के भाषा विषयक चिन्तन को निरूपित करने का प्रयास किया गया है। प्रसंगानुसार द्वितीय परिच्छेद को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है।

प्रथम खण्ड में व्याकरण तथा काव्य शास्त्र की दृष्टि से भाषा की व्युत्पत्ति, महत्ता, वैयाकरणों एवं काव्य शास्त्रियों की भाषा विषयक अवधारणा तथा शब्दार्थ चिन्तन का विवेचन किया गया है।

द्वितीय खण्ड में काव्य शास्त्र के प्रमुख भाषिक सम्प्रदायों जैसे अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य का भाषिक दृष्टि से विवेचन करने के साथ-साथ तर्क देकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि काव्य शास्त्र के ये विभिन्न सम्प्रदाय भाषा के ही उत्स, तथा शब्दार्थ के मधुर सम्बन्धों की तलहटी में उगे हुए वृक्ष की अनेक शाखाएं हैं।

तृतीय खण्ड में पाश्चात्य समीक्षकों के विभिन्न वादों जैसे नव्यशास्त्रवाद, स्वच्छन्दतावाद, कलावाद, प्रतीकवाद, अभिव्यंजनावाद, बिम्बवाद, अति यथार्थवाद एवं प्रकृतवाद तथा नयी आलोचना में निरूपित विभिन्न भाषिक उपादानों एवं जैसे-टोन, अभिव्यंजना, प्रतीक, बिम्ब, आक्रोश एवं व्यंग्य, तनाव, विरोध तथा विसंगति पर गहराई के साथ विचार किया गया है।

तृतीय परिच्छेद में भाषा के काव्यशास्त्रीय सन्दर्भ को लेकर चर्चा की

गयी है जिसमें सामान्य बोल चाल की भाषा तथा काव्य भाषा के अन्तर को स्पष्ट करते हुए काव्य क्या है ? शास्त्र क्या है ? काव्यशास्त्र का स्वरूप क्या है ? काव्यशास्त्र का अर्थ क्या है ? उससे किस प्रयोजन की सिद्धि होती है ? क्या इन काव्यशास्त्रीय उपादानों अलंकार, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति, औचित्य तथा बिम्बों एवं प्रतीकों के द्वारा रचनाकार के मर्म को टटोला जा सकता है ? बदलती हुई काव्य सम्वेदना के साथ कवियों एवं समीक्षकों ने नये काव्य शास्त्र की सम्भावना की जिसका मूलाधार रचनाकार की भाषा को ही माना गया । प्रस्तुत परिच्छेद में नये काव्यशास्त्र की संभावना की चर्चा के साथ नयी कविता के कवियों तथा समीक्षकों के मत भी यथासंभव प्रस्तुत किए गए हैं ।

चतुर्थ परिच्छेद में रचनाकार की अनुभूति को सही अभिव्यक्ति न मिलने के कारण उत्पन्न होनेवाला भाषा का संकट, नयी भाषा की तलाश, तथा भाषा के बदलते तेवर पर विचार किया गया है । प्रस्तुत परिच्छेद दो खण्डों में विभाजित है ।

प्रथम खण्ड में भाषा की क्रान्ति यात्रा तथा भाषा के संकट से जूझते हुए कवियों के वक्तव्य का व्यौरा दिया गया है । आज का रचनाकार कविता के क्षेत्र में अनेक समस्याओं से उलझ रहा है । जिसके लिए सही भाषा न मिल पाने की तथा सम्प्रेषण न होने पाने की समस्या है । एक सही भाषा के अभाव में उसका कवित्व अधूरा है ।

द्वितीय खण्ड में नयी भाषा की तलाश तथा भाषा के बदलते तेवर पर चर्चा की गयी है । सामाजिक अव्यवस्था एवं विसंगतियों के कारण भाषा तनाव एवं झुंझलाहट की स्थिति से होकर गुजर रही है जिससे स्पष्ट कथन की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती । कभी- कभी वह व्याकरण पस्त तो कभी अधिक सरल तो कभी- कभी पत्रकारिता की शैली में देखने को मिलती है । प्रत्येक रचनाकार

का अनुभव नया होता है और वह अपनी कविता के माध्यम से एक नई चीज समाज को देना चाहता है जिसके लिए उसे एक नई टैकनीक का सहारा लेना पड़ता है । चतुर्थ परिच्छेद के इस खण्ड में इन्हीं अभिव्यक्ति गत संभावनाओं को लेकर चर्चा की गयी है तथा कवियों, समीक्षकों के मत भी यथासंभव उद्धृत किए गए हैं ।

पंचम् परिच्छेद के अन्तर्गत भाषा का आलंकारिक वर्ण्य वैचित्र्य, अलंकारों में निहित अभिव्यक्ति विधान तथा नयी कविता के कथन की नयी भंगिमाएं, भाषा की अप्रस्तुत योजना, पूर्ववर्ती अलंकारों की सीमा का अतिक्रमण करती हुई कथन की नयी भंगिमाएं तथा लोकोक्ति एवं मुहावरों का समावेश हुआ है । यह पंचम् परिच्छेद पांच खण्डों में विभाजित है ।

प्रथम खण्ड में अलंकारों का विवेचन किया गया है । अनेक कवियों के उद्धरण भी प्रस्तुत किए गए हैं ।

द्वितिय खण्ड के अन्तर्गत उपमान विधान तथा कविता के नये उपमानों का विस्तृत विवेचन किया गया है ।

तृतीय खण्ड में बिम्ब, मिथ, मिथक इतिहास रूपादि का विस्तृत विवेचन किया गया है ।

चतुर्थ खण्ड में प्रतीक और लक्षणा का अन्तर स्पष्ट करते हुए प्रतीकों के नये प्रयोग की विवेचना की गयी है ।

पंचम् खण्ड में लोकोक्ति एवं मुहावरों को रूढ़ा लक्षणा के अन्तर्गत मानकर कवियों के समुचित उद्धरणों के साथ विवेचन-विश्लेषण किया गया है ।

षष्ठ परिच्छेद में भाषा के ध्वनि एवं वक्रोक्ति सिद्धान्त को लेकर चर्चा का विषय उठा है जिसमें भाषा के सूक्ष्म से अवयवों जैसे ध्वनि, वर्ण, पद, प्रत्यय, वाक्य आदि का विवेचन हुआ है साथ ही साथ भाषा- सम्वेदना, व्यंग्य

kalpana's

एवं व्यंजना व्यापार, तथा वक्रता के नए आयामों की भी चर्चा हुई है इस प्रकार षष्ठ परिच्छेद षष्ठ खण्डों में विभाजित है।

प्रथम खण्ड के अन्तर्गत ध्वनि के द्वारा नयी कविता की भाषा में आनेवाली रवानगी, प्रेषणशीलता अर्थसघनता तथा अर्थ व्यंजकता एवं ध्वनि सौन्दर्य पर विचार किया गया है।

द्वितीय खण्ड में भाषा की संवेदनात्मक परिणति पर चर्चा की गयी है तथा आवश्यकतानुसार ध्वनिकार के सिद्धान्त का भी निरूपण किया गया है।

तृतीय खण्ड में भाषा के व्यंग्य एवं व्यंजना व्यापार की चर्चा हुई है। भाषा में व्यंग्य की सत्ता जहां होगी वहां कोई न कोई रस अवश्य होगा। क्योंकि रस सदा व्यंग्य रूप होता है। इस प्रकार इस खण्ड में रस की भी चर्चा की गयी है तथा आक्रोश एवं व्यंग्य की सीमा रेखा को अलग महत्ता देने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ खण्ड में अर्था-भिव्यक्ति के नए विधान की चर्चा की गयी है।

पंचम् खण्ड में नयी कविता की भाषा में होनेवाले ध्वनि एवं वक्रोक्ति मूलक प्रयोगों की चर्चा की गयी है तथा यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि भाषा के जिस स्तर को ध्वनि प्रभावित करती है उसी स्तर को वक्रोक्ति भी। इस प्रकार वर्ण विन्यास वक्रता एवं वर्ण ध्वनि, पद पूर्वार्द्ध वक्रता, पद परार्द्ध वक्रता एवं पद ध्वनि, वस्तु वक्रता एवं वस्तु ध्वनि, तथा प्रकरण वक्रता, प्रबन्ध-वक्रता एवं प्रबन्ध ध्वनि पर गहराई के साथ विचार किया गया है।

षष्ठ खण्ड के अन्तर्गत फैंटेसी, उलटवांसी, शब्द विच्छेदन, शब्द खण्डों के मध्य अन्तराल का आयोजन, शब्दों का सही बटा प्रयोग, शब्दों का लघ्वीकरण, आवृत्ति, पैरेन्थीसिस, हाइफन, कामा एवं विराम चिन्हों से उत्पन्न वक्रता के

के नये आयामों की चर्चा की गयी है । तथा नयी कविता के कवियों एवं समीक्षकों के उद्धरणों को यथासंभव प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया गया है ।

सप्तम् परिच्छेद के अन्तर्गत भाषा का सौन्दर्य विधान, भाषा का रीतिगत सौन्दर्य, नयी कविता की भाषिक संरचना, नयी कविता की भाषिक उपलब्धि तथा उपसंहार का विवेचन किया गया है । प्रस्तुत परिच्छेद चार खण्डों में विभाजित है ।

प्रथम खण्ड में चित्रांकन, रेखांकन एवं रंग योजना द्वारा उत्पन्न होनेवाले काव्यभाषा के सौन्दर्य का विवेचन किया गया है ।

द्वितीय खण्ड में काव्य भाषा के रीतिगत सौन्दर्य की विवेचना की गयी है जो मूलत: भाषा की कठोर एवं कोमल ध्वनियों पर आश्रित है । रीति अर्थात् इन कठोर एवं कोमल ध्वनियों के साथ के साथ गुणों का होना भी अपेक्षित है अत: इसके साथ काव्य के गुणों की भी चर्चा की गयी है ।

तृतीय खण्ड में भाषा की संरचना, भाषा का औचित्य तथा शब्दों के उचित संग्रथन को लेकर चर्चा की गयी है । तत्सम् तद्भव देशज एवं विदेशी शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ शब्दों के नये प्रयोग जैसे संज्ञा से विशेषण, क्रिया से संज्ञा, पुल्लिंग से स्त्रीलिंग तथा संधि एवं समास द्वारा निर्मित नये शब्दों के प्रयोग की विस्तृत चर्चा हुई है ।

चतुर्थ खण्ड में भाषा की उपलब्धि तथा उपसंहार पर प्रकाश डाला गया है ।

अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत सहायक ग्रन्थों व पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है ।

शोध का यह विषय कितना नवीनतम एवं मौलिक है इसकी परख एक सहृदय अध्येता ही कर सकता है । आचार्य अभिनव गुप्त का यह कथन मेरे इस नये विषय के शोध के लिए सर्वथा सुसंगत प्रतीत होता है —

kalpana's

चितं निरालम्बनमेव मन्ये
प्रमेय सिद्धौ प्रथमावतारम् ।
तन्मार्गलामे सति सेतु बन्धे
पुर प्रतिष्ठापि न विस्मयाय ।।

जैसे रास्ता और पुल बनाने का प्रारम्भिक कार्य अजीब, अटपटा और शून्य में लटका हुआ सा प्रतीत होता है । पर बाद में मार्ग बन जाने पर पुल का नक्शा साफ हो जाता है । ठीक उसी प्रकार नए सत्य के शोध की प्रक्रिया शुरू- शुरू में भले ही अटपटी दिखलायी पड़ती है । अन्त में उसकी समग्रता के आलोक में हर चीज जुड़ी और सप्रयोजन लगने लगती है ।

अन्त में मैं पूज्य गुरु जी डॉ० दयाशंकर शुक्ल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय-बड़ौदा के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिनके कुशल निर्देशन, प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन से इस शोध- प्रबन्ध को सुचारु-रूप से प्रस्तुत करने का अधिकारी बना हूं । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा विश्वविद्यालय के अधिकारियों का भी मैं आभारी हूं, जिनका आर्थिक सहयोग मेरे लिए लाभप्रद रहा । श्री काशी विश्वनाथ महादेव के ट्रस्टी श्री लक्ष्मीदास पटेल तथा ट्रस्टीमंडल और कर्मचारियों का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने अध्ययन के लिए निरन्तर सहयोग दिया । उन पुस्तकालयों एवं शिक्षा संस्थानों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूं जिनसे मुझे आवश्यक सामग्री के संचयन में सहायता मिली । डा० विष्णु विराट चतुर्वेदी, श्रीमती कुसुम शर्मा, कुमारी लक्ष्मी बेनीवाल, श्रीमती-मधु अस्थाना के सहयोग को तो मैं कभी भूल नहीं सकता । अन्त में मैं डॉ० जगदीश गुप्त, श्री गंगाप्रसाद मिश्र, डा० शम्भूनाथ चतुर्वेदी, डॉ० रमेशकुमार शर्मा, डा० विनय, डॉ० देवी सहाय गुप्त , डा० शशिभूषण शीतांशु, डा० राममूर्ति त्रिपाठी, डा० भोलाभाई पटेल के प्रति आभारावनत हूं जिन्होंने मुझे शोध के महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत कराया ।